वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अक्तूबर – 2018

* परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है
* नेचर के कंगाल भिख़ारी और भण्डारी
* ईमानदारी का सुन्दर उदाहरण
* हाय! मिथ्या विश्वास कितने भयानक!
* इन सचाईयों को मत भूलो
* प्रेरणा दायक जीवन
* शुभ संग्राम

भगवान देवात्मा के फरमान

- धर्म की सोसाईटी धर्म लाने के लिए है। उसमें धर्म के नियम काम करेंगे। मक्कारी, राजनीति, धोख़ेबाजी वगैरा इसमें काम नहीं आएगी।
- मैं परोहित रखना नहीं चाहता। मैं एक भी परोहित नहीं रखूंगा सब दफा हो जाएं।
- स्थगित जनों को बहाल करना, गिरे हुओं को उठाना, परिवारों को समाज के साथ जोड़ना, इत्यादि यह सब कर्मचारी का काम है।
- अगर तुमने चपरासी बनने वाले जनों को विकासार्थी बना लिया तो यह ठग्गी है और शरारत है, कपटता और मक्कारी है।
- हरेक सभा का अपना कोई लक्ष्य होना चाहिए। कोई सभा ऐसी न हो जिसमें सच्चे अर्थो में आत्माओं में उच्च परिवर्तन न आवे। लोग तन-मन, धन अर्पण करने के लिए तैय्यार न हों। ऐसी सभाएं हम नहीं चाहते, कि सिर्फ कथा की तरह हों। वह हमें बेवकूफी की बात मालूम होती है और बेवकूफी की बात हम अपने सामने होने देना नहीं चाहते।
- मैं काम के आदमी चाहता हूं, बाकी सब दफा कर देना चाहता हूं। हरामख़ोर, धोखेबाज जनों को वजीफे न दिए जाएं, चाहे दो ही आदमी हों (मगर काम के हों)।
- श्रीमान धर्म बल जी के किसी कागज़ के पेश करने पर भगवान ने फरमाया :-
- क्या कौंसल में यह भी होता है, जब दिमाग साथ न देता हो तो एक के पीछे हां में हां मिला देते हों, या कुछ Opposition (विरोधता) भी होती है।
- समाज का रु० मेरे पास अमानत है- उसको अगर बिगाड़ूं, तो मेरा पतन होगा। तो मेरा यह फर्ज़ है, कि समाज का कुछ नुकसान न हो जाए। सन्तरी जो बैंक में पहरा दे रहा है, यदि वही नुकसान करने लगे तो बैंक कैसे बचेगा?

नोट:- परम पू० भगवान देवात्मा की यह तड़प उस समय की है, जब उनके पास चोटी के कर्मचारी थे, आज की हालत देखकर उनके दुख और सदमें का हम संवेदन हीन, स्वार्थी, अंह और नीचघृणा के पुतले अन्दाज़ा भी नहीं लगा सकते।

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 5
अक्तूबर – 2018
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है

मनुष्य का नीच जीवन अन्धेरा पैदा करता है। इसलिए आम हृदय अन्धेरे में ग्रस्त ही होते हैं। इस हृदय के अन्धकार के कारण मनुष्य जीवन की उच्च, कीमती और महान सचाईयों को देख नहीं सकता। जैसे कौओं को हंस की बोली समझ नहीं आती, इसी प्रकार मनुष्य को महान मनुष्यों की बताई बातें वा सचाईयां समझ नहीं आतीं। जब मनुष्यों की बातें ही समझ नहीं आतीं तो देवात्मा की बताई हुई उच्च कोटि की सचाईयां जल्दी उसके हृदय में कैसे उतर सकती हैं।

"परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है" यह एक महान जीवन तत्व है। यह एक बहुमूल्य सचाई है। यह मनुष्य के हृदय में उतरनी कठिन है, इसलिए मनुष्य इससे कोई लाभ नहीं उठाता या बहुत नाममात्र ही लाभ उठाता है।

"परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है" यह शब्द परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की याद में "कर्मचारी निवास" के उदघाटन के समय फरमाए थे। उन्होंने कुछ इस तरह फरमाया था कि "ग़ाफिल मत रह" नामक लेख पढ़कर श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के सामने यह आया था कि मैं कहां पड़ा हुआ हूं। जो चीज़ें मेरे साथ नहीं जा सकतीं, वह मेरी कैसे हुई। मनुष्य की हस्ती में आत्मा ही सार वस्तु है। उनको देवात्मा की रोशनी में यह सचाई नज़र आई। उनके सामने यह हकीकत खुली कि दुनियां के सब सामान असार हैं। श्रद्धेय श्रीमान जी की यह विशेषता थी कि उनके भीतर रूहानी रोशनी घुस गई जो आत्मा के तत्व दिखा सकती है। वह रुड़की कालिज से आकर पूजनीय भगवान को लहौर में मिले, वहां आकर उनके भीतर देव ज्योति के भिन्न देव तेज भी पहुंचा, तब उन्हें पता लगा कि "परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है" श्रीमान देवत्व सिंह जी को मालूम हुआ कि ज़िन्दगी परोपकार से ही बनती है। उनके भीतर हलचल पैदा हुई। आत्म हित की जब इच्छा जागी, तो उनकी ज़िन्दगी में परोपकार का काम शुरू हुआ। यह आला ज़िन्दगी का आगाज़ था।

यह सचाई एक महान सचाई है कि परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है, परन्तु मनुष्य को यह सचाई सारी उमर नज़र नहीं आती। यह सचाई देवात्मा की रोशनी में श्रद्धेय देवत्व सिंह जी को नज़र आई और सदा के लिए उनके जीवन में उतर गई। इस सचाई को देखने से श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी का जीवन मार्ग उन करोड़ों अरबों मनुष्यों के जीवन मार्ग से बिल्कुल अलग वा निराला हो गया, जिनको उक्त सचाई बिल्कुल भी नज़र नहीं आई थी।

इस सचाई को गहराई से अनुभव करने के कारण श्रीमान जी के लिए इस संसार के सुख स्वाद

और पदार्थ और सम्बन्धी फीके पड़ गए और वह पक्के इरादे से विशुद्ध परोपकार की राह पर पड़ गए, फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

आम मनुष्य इस धरती पर जन्म लेकर जब से होश सम्भालता है, तो उसको सुखदायक पदार्थ वा सम्बन्धी मिलते हैं, वह स्वभाविक ही बहुत अच्छे और प्यारे लगते हैं, और वह उनके साथ बन्धता जाता है, और अपने नीच सुखों की तृप्ति में लीन हो जाता है। साधारणत: मनुष्यों के जीवन का लक्ष्य वा मूल मन्त्र यह बन जाता है, (Eat drink & be Merry) खाओ, पीओ और मौज बहार करो। अधिक से अधिक सुख स्वाद देने वाले सम्बन्धी वा पदार्थ इकठ्ठे करो। यही जीवन है। ऐसे मनुष्य दुनिया के पदार्थों के कीड़े बनकर सारी उमर जीवन की बहुमूल्य सचाई को देख नहीं सकते कि परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है। इसलिए उससे कोई लाभ नहीं उठा सकते। जितना भी मनुष्य दुनिया का कीड़ा बनता जाता है, वह उक्त सचाई से दूर होता जाता है।

देव समाज के सेवक, सेवकाओं को तो क्या, कर्मचारी होने पर भी यह बहुमूल्य सचाई नज़र नहीं आती। वह इस सचाई की रोशनी में जीना तक आरम्भ नहीं करते, बल्कि हृदय के अन्धेरे के कारण, सुख स्वादों की बहुत ही ज़ोरदार चाट के सदका अपने सुख स्वादों और उनके सामानों के साथ बदमस्त होकर अपने ऐसे जीवन को ही ठीक और रोशनी भरा देखकर ग़ल्तफहमी में सारी सारी उमर गुज़ार देते हैं।

आम इन्सानी बच्चे स्वाददार खानों के दिवाने, नित बदलते फैशनों और पोशाकों वा दिखावे के दिवाने, अच्छी और बड़ी कारों,कोठियों के दिवाने, फिलमों, एक्टरों, होटलों, कलबों पार्टियों, डिस्को डांसों के दिवाने बने रहते हैं, इसी को वह अपनी शानदार ज़िन्दगी देखते और महसूस करते हैं। ऐसी दिवानगी के दिवाने कभी भी इस बहुमूल्य जीवन की सचाई को नहीं देख सकते, उससे लाभ उठाना तो दूर की बात। उनके हृदय में अन्धकार बढ़ता जाता है, ज्यों ज्यों इन सुखों की चाट बढ़ती जाती है। उक्त पदार्थो की दिवानगी मनुष्य के पास कोई समय ही नहीं रहने देती, जिसमें मनुष्य कोई और बढ़िया सोच रख सके। उनको अपने स्वयं के दिखावे से ही फुरसत नहीं।

एक वा दूसरे व्यसन, नशे, मांसाहार, शिकार, जुए, लिंग तृप्ति के जान लेवा इश्क मनुष्य को अन्धा बनाए रखते हैं, उसको कोई उच्च सोच आने ही नहीं देते। परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है,किन पागलों की बोली है, वह समझ नहीं सकते।

धन, धरती और पदार्थ भी मनुष्य प्रकृति के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। सारा संसार इस मीठी झलक पर मोहित है। कीड़ों की तरह अरबों मनुष्य इनके परिणाम देखे बिना इनकी प्राप्ति पर लट्टू हुए रहते हैं। धन, धरती वा सुख ही लक्ष्य बन जाता है। यह समझ आना असम्भव सा हो जाता है कि इससे ऊंचा भी कोई काम हो सकता है। उनके लिए धन की प्राप्ति नई जान संचार कर देती है। क्योंकि इसी में उन्हें तृप्ति मिलती है। धन का वियोग एक एक जन के लिए घातक हो जाता है। परोपकार पागलों का काम दिखाई देता है।

मदर टैरेसा को किसी जन ने रायल रौस बहुत बड़ी कार भेंट की थी, उन्होंने उसमें बैठकर भी नहीं देखा, उसको झट नीलाम करके, पैसे सेवा में लगा दिए।

मान, इज्ज़त, मर्तबा, पद, पोज़ीशन और प्रभुत्व आदि भी मनुष्य प्रकृति को बहुत आकर्षित करते हैं। राजनैतिक सर्कल में तो यह दिवानगी की हद तक होते हैं। यह सारे आकर्षण मनुष्य को अन्धकार की ओर ले जाते हैं, जिससे बहुत सी बहुमूल्य

सचाईयां देखने की क्षमता मारी जाती है।

परोपकार के बिना जीवन मौत है, यह सचाई उन लोगों को ही कुछ दिखाई दे सकती है जिनको ज़िन्दगी क्षण भंगुर दिखाई दे, जिनको उमर दौड़ती वा मौत की ओर जाती दिखाई दे। जिनको मरना याद ही नहीं रहता, जो संसारिक सुखों, पोशाकों, जेवरों, कारों, कोठियों वा स्वाददार खानों आदि पर परवानों की तरह गिरते हैं और उन्हें पता ही नहीं लगता कि कब अन्त समय आ दबोचता है, वह यह सचाई नहीं जान सकते।

भगवान देवात्मा ने एक बार फरमाया था, "हम नेचर के अंश है, हमारे पास जो कुछ भी है, वह वास्तव में नेचर की ओर से बतौर अमानत है यह हकीकत यदि सामने खुल जाए तो यह सत्य तुम्हें दिखाई देना चाहिए कि यदि यह हैं, तो उसके सम्बन्ध में देवात्मा जो रोशनी रखते हैं, वह इस विषय में क्या शिक्षा देते हैं? वह यह है कि मनुष्य को उन सब शक्तियों से ऊपर होना चाहिए कि जो अमानत में ख़्यानत करने के लिए मजबूर करती हैं। और दूसरी ओर अपने धन को नेचर के विकासकारी नियम का साथ देने के लिए इस प्रकार काम में लाना चाहिए: -

1. अपने आश्रित जनों की रक्षा और उन्नति के लिए
2. अपने सम्बन्धों में जहां हानिकारक बने हैं, उस हानि का परिशोध करने के लिए
3. जिस जगत से हमने हित पाया है या पा रहे हैं या हित पाने की उमीद रखते हैं, उन हितकर्ताओं की सेवा के लिए
4. इस नेचर के भीतर जो अस्तित्व हैं, जो हमारे उपकारी भी नहीं, उनकी बेहतरी या उनके उपकार के लिए, जिस में सब आ जाते हैं।

हमें इसी विधि से अपने धन वा जायदाद को खर्च करना चाहिए। अब इस सम्बन्धी ख़्यानत कब होती है, जब मनुष्य हित परिशोध वा हानि परिशोध के भाव से कुछ करना नहीं चाहता। ऐसे अमल सब चोरी, डाका और अपहरण में शामिल हैं, जिससे आत्मा नीच गति परायण होकर ख़त्म हो जाता है, हमारे अपने पास जो कुछ है, हमें इसी प्रकार खर्च करना चाहिए।

गुरू महाराज बार बार यह सचाई दिलों में उतारने की कोशिश करते थे कि जब तक मनुष्य अपने से निकल कर दूसरों के लिए सेवाकारी नहीं होता, तब तक धर्म जीवन का आरम्भ नहीं होता।

पर सेवा के बिना मनुष्य एक मुर्दा लाश की तरह रह जाता है, केवल इतना भर है कि उसकी सांसें चलती हैं। परोपकार के बिना मनुष्य पशु ही रह जाता है। पशु भी अपने लिए मारा मारा फिरता है, गोबर का कीट भी अपना पेट तो भरता है।

"बिन सेवा धरिग हाथ पैर" सेवा और सच्चा परोपकार ही धर्म जीवन का रहस्य है।

मिस्तरी वधावा राम जी (दाता जी) मज़दूरी करते, उसमें से भी सेवा के लिए समय निकालते और लोगों से मुफ्त सेवा की भीख़ मांगते।

श्रीमती जमना बाई जी धर्म पत्नी श्रीमान सेठ राधा कृष्ण जी बुढ़ापे में प्रत्येक वर्ष संगत में आतीं और कई महीने रहतीं। एक अमीर परिवार से सम्बन्धित होकर हररोज़ कई घण्टे लोगों के घरों को विज़िट करती और लंगर के लिए आटा दाल इक्ठ्ठा करतीं, स्त्रियों की मिथ्या छुड़वातीं, संगत का पता देतीं। बहुत वृद्ध होकर भी अपना भला करने का कोई मौका नहीं छोड़ती थीं। काश! हमें गुरू महाराज की रोशनी मिल सके और यह सचाई कि "परोपकार के बिना जिन्दगी मौत है" इसकी समझ आ सके और हमारे दिलों में गहरी उतर सके।

- बलदेव सिंह

नेचर के कंगाल भिखारी और भण्डारी

(अमृत – वर्षा)

भगवान देवात्मा ने हृदय परिवर्तन विभाग में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए वेतन भी लेना उचित नहीं समझा था, क्योंकि भगवान देवात्मा को यह सत्य विश्वास था कि जो कर्मचारी व सेवक हृदय के पूरे उत्साह और पूरी सफलता के साथ अपनी कुल शक्तियों को नेचर के नाना विभागों की सेवा के लिए विशेषत: देव समाज की सेवा के लिए अर्पण करेंगे, वह नेचर के विकास के नियम के अनुसार कभी और किसी अवस्था में भी भूखे नहीं मरेंगे। उनकी हर प्रकार से रक्षा होगी। भगवान देवात्मा के प्रकट हुए इस सत्य को श्रीमान स्वामी गोबिन्द राम जी ने इस कदर अनुभव किया, कि उनकी खुशी की हद न रही। जब उनको यह पता लगा कि उनकी मासिक निर्वाह वृत्ति बन्द हो जायेगी, तब वह इस कदर उत्साह से भर गये कि भगवान देवात्मा की इस कृपा के लिए बार बार धन्यवाद देते रहे। जीवन दाता भगवान देवात्मा का यह विचार था, कि जो जन आत्मिक परिवर्तन विभाग में काम करते हैं, उन्होंने तो उच्च भावों का दान देना है, यदि उनके हृदय में उच्च भाव विद्वमान न हों तो तब वह औरों को कहां से दान देंगे, यदि वह धन के भूखे, तो बहुत बड़े घाटे में हैं, यदि वह नाम, यश और ताकत के भूखे हैं, तो वह इन नीच भावों को रखकर औरों का किस तरह उच्च बना सकते हैं। इसलिए आत्म परिवर्तन विभाग में काम करने वालों के लिए भगवान देवात्मा ने जो आदर्श रखा हुआ था, वह जैसे सुन्दर और श्रेष्ठ था, वैसे ही देव समाज के लिए हितकर और मुबारक था। भगवान देवात्मा मेरे अपने शब्दों में ऐसे उच्च जीवनधारी कर्मचारियों को तो नेचर के खजाने के भण्डारी समझते थे, और स्वार्थ परायण घमण्डी, ताकत के भूखे, ईर्ष्या और द्वेष परायण और नीच घृणाकारी जनों को नेचर के कंगाल भिखारी समझते थे।

क्या इसमें कोई सच्चाई है? हाँ अवश्य है। एक जन ने दिल्ली में इस सच्चाई से अपने जीवन का प्रमाण दिया था। वे डिप्टी कलैक्टर थे, उनके हृदय में एक भाव उन्नतशी रूप में उत्पन्न हुआ। वह सात्विक भाव था। इस भाव की तृप्ति के लिए वह यह चाहते थे, कि जगह जगह स्कूल और कालेज खोले जायें! जिनमें खास प्रकार की शिक्षा दी जाये। अब इस हवन कुण्ड में आहुति डालने के लिए उन्होंने यह अनुभव किया, कि पहली आहुति उनकी अपनी हो। उसके लिए उन्होंने एक साधारण सभा बुलाई, और उनकी धर्म पत्नी इस सभा में विद्यमान थी। डिप्टी साहब ने अपने भावों का प्रकाश किया और फिर बतलाया कि सामने मेरा मकान है, वह मेरा अपना है। इस मकान में जो कीमती सामान पड़ा है वह सब मेरा अपना है। मैंने और मेरी धर्म पत्नी ने यह फैसला किया कि जो कपड़े हमारे शरीर पर हैं, उनको छोड़कर बाकी मेरा मकान और मेरा सामान और कुल सम्पत्ति की यह चाबियां हैं, जो आप लोगों के हवाले करता हूं। अब पब्लिक उनकी मालिक है। मेरे बनाये हुए ट्रस्टी इस सबका चार्ज लें। उनके इस भाव प्रकाश ने इस कदर जादू का असर किया, कि इस कार्य के लिए धड़ाधड़ मद्द आनी आरम्भ हो गई। नेचर के भण्डार के दरवाजे खुल गये। जिसने अपने आपको पूर्ण रूप से कुर्बान किया था, वह नेचर के भण्डारी बन गये। लाखों रुपयों को उसको मदद मिली और हजारों की संख्या में बच्चे आज कल उसके स्थापन किए हुए स्कूलों और कालेजों में विद्या लाभ कर रहे हैं और उनकों धन्यवाद दे रहे हैं।

नेचर के कंगाल भिखारी सब स्वार्थ परायण जन हैं। पटवारियों का महकमा अपनी बददयानती के

लिए मशहूर है। कईयों की शरारत से डरकर जमींदार लोग हर समय पटवारियों को रिश्वत देने के लिए तैयार रहते हैं। एक बार की घटना है, कि एक पटवारी के लिए एक जमींदार उनकी बड़ी गड़वी में दूध लाया। जमींदार ने अभी उसको दूध दिया नहीं था, पटवारी ने जमींदार से कहा कि मेरी तो तबदीली हो गई। ज्यों ही जमींदार को पता लगा, कि अब यह हमारे हलके का पटवारी नहीं रहा, त्यों ही उसने गड़वी को मुंह लगाकर सारा दूध पी लिया और खाली गड़वी पटवारी के हाथ में दे कर कहा, कि जनाब यह ले लो अपनी गड़वी। हमारे भारत वर्ष के इतिहास में यह वर्णन आता है, कि मुसलमानी राज्य में काजियों का ही राज्य होता था। एक जबरदस्त काजी ने अपने अत्याचारों से इस कदर डर बिठा दिया था, कि प्रतिदिन उसकी सलामी के लिए सैकड़ों जन खड़े रहते थे कि जनाब को खुश रखें ताकि वह उन पर जुल्म न करे। जब यह काजी मर गया तब सरकार ने दूसरा काजी नियुक्त किया। हैरानी की बात यह थी, कि उसके जनाजे के साथ सिवाय उसके रिश्तेदारों के और कोई नहीं था। इस लिये यह एक मुहावरा बन गया था कि जीते हुए काजी के लिए हजार सलामी और मरे हुए काजी को तो कुत्ते की भौंक भी नसीब नहीं। आखिरकार स्वार्थी का कौन हो सकता है? जब स्वार्थी किसी का नहीं, तब और कोई उसका क्यों बनेगा? उससे डरकर तो उसको सलामी करेंगे, परन्तु पीछे उसको हर समय लानत भेजेंगे। नेचर ने ऐसे स्वार्थियों को अपने भण्डार से कुछ नहीं दिया, फिर वह किसी को क्या दें। स्वार्थ परायण लोग तो नेचर की चीजों को भी अपना ही समझते हैं। वह नेचर के सम्बन्ध में ही चोर और डाकू बनते हैं, बाहय्क चोरों और डाकुओं का कौन? नेचर के चोरों और डाकुओं का तो कोई हो ही नहीं सकता। वह तो विकास के नियम से कटे हुए हैं। विकास का नियम ही बरकतों का भण्डार है जो इन बरकतों से कटे हुऐ है, वह पूर्ण रूप से कंगाल हैं।

उनसे पूछो जिन्होंने सब कुछ परोपकार में अर्पण कर दिया। क्या उन्होंने उसको घाटे का सौदा समझा है? कदापि नहीं। श्रीमान भाई मोहन देव जी ने बहुत अच्छी नौकर को त्यागा। और सच्चे त्यागी का जीवन व्यतीत किया। उन्होंने बीसियों बार कहा, कि मैंने सब कुछ त्याग कर जिस कदर आत्मा का धन पाया है, उसको सामने लाकर मैं अपने आपको धन्य धन्य अनुभव करता हूं। मैं तो एक सैकन्ड के लिए भी नहीं पछताया कि मैंने कोई बड़ा त्याग किया है, श्रीमान देवत्व सिंह जी के शब्दों को पढ़ो तो आपको पता लगेगा, कि उन्होंने क्या कुछ त्याग नहीं किया। फिर भी उन्होंने क्या अनुभव किया? उन्होंने तो यहां तक लिखा, कि यदि किसी भिखारी को राज्य मिल जाये, यदि किसी मरे हुये को नई जिन्दगी मिल जाये और सारी दुनियां का राज्य भी मिल जाये, यदि किसी मरे हुये को नई जिन्गी मिल जाये और सारी दुनियां का राज्य मिल जाए तो जिस कदर उसको खुशी होती है, उसकी तुलना में जो महादान मैने भगवान देवात्मा से पाया है, उसकी अनगिणत उच्च कोटि की सात्विक खुशी मुझे प्राप्त हुई है। इसी प्रकार श्रद्धेय डॉ. कुमारी प्रेम देवी जी के जीवन का हाल है। ऐसा ही श्रीमान पण्डित परमेश्वर दत्त जी ने अनुभव किया। यह सब माननीय कर्मचारी नेचर के भण्डारी थे, परन्तु वह जन जो अपना आप देने में कंजूस हैं, या तो देव समाज में आकर भी धन, पद या ताकत आदि के भूखे रहेंगे, वह नेचर के भंडारी बनने के अधिकारी होकर भी नेचर के कंगाल भिखारी रह जायेंगे। इसलिए हमारा बहुत बड़ा कर्तव्य है कि हम भगवान देवात्मा की ज्योति में अपनी आत्म परीक्षा करें कि क्या हम दिनों दिन नेचर के भंडारी बनते जाते हैं या कंगाल भिखारी? क्या अपने जीवन की रक्षा और विकास का सामान पाकर भी हम नंगे भूखे और रोगी बनकर मृत्यु के राही तो नहीं बन रहे?

ईमानदारी का सुन्दर उदाहरण

ईमानदारी गरीबी व अमीरी की मुहताज नहीं। आज के युग में जहां ईमानदारी राजनैतिक अखाड़ों में, धार्मिक स्थलों में, पुलिस में, फौज़ में, ढूढ़ने पर भी नहीं मिलती, कोई विभाग ऐसा नहीं जहां बेईमानी का बोल बाला न हो, वहां ऐसी उदाहरण किस क़दर सुन्दर अैर प्रेरणा - दायक है।

पुल गिर रहे हैं, सड़कें टूट रही हैं, गरीबों के लिए भेजे जाने वाले आनाज अमीरों के खजानों में जा रहे हैं। एम. पी., एम. एल. ऐ., जो जनता की सेवा की सुगन्ध लेते हैं, वह दोनों हाथों से जनता को लूट रहे हैं। गरीब जनता त्राहि त्राहि कर रही है, यह लुटेरे अपनी तिजौरीयां भर रहे हैं, जो कल तक साईकल लेने की हैसीयत नहीं रखते थे, आज मोटर गाड़ियों की लम्बी कतारों के मालिक हैं। कोई चाय बेचने वाला, कोई रेहड़ी लगाने वाला, कोई नीची जाति की दुहाई देने वाला, अपने कपड़ों, अपनी शानोशौकत, अपने विदेशी सफरों पर गरीब देश का पैसा पानी की तरह बहा रहे हैं। ऐसे जन इमानदारी की कीमत क्या जाने, जैसे लाल बहादुर शास्त्री जी ने जानी थी। 50 रुपये सरकार से वेतन मिलता था। किसी ज़रूरत पड़ने पर उनकी धर्म पत्नी ने 5 रुपये बचत के उन्हें दिए, शास्त्री जी के पूछने पर कि यह पैसे कहां से आए? पत्नी ने बताया कि मैंने थोड़ा थोड़ा करके बचत की थी। शास्त्री जी ने उसी समय सरकार को लिख भेजा कि मेरा वेतन 45 रुपये कर दिया जाए। वाह! शास्त्री जी!! ऐसे नेताओं की ईमानदारी पर यह देश खड़ा था, परन्तु आज बईमानी और लूट के लिए भ्रष्ट देशों की कतार में 2 - 4 को छोड़कर नीचे गिर गया है।

पुलिस में बेईमानी भी हद पार कर चुकी है। यदि कोई इक्का दुक्का ईमानदार रहना चाहता है। उसे या तो मार दिया जाता है, या राजनैतिक दबाव में उसे चुप रहना पड़ता है।

मीडिया सचाई को उजागर करने में समक्ष था, परन्तु राजनैतिक लीडरों ने उसे भी खरीद लिया है। वह वही बात करते हैं जो लीडर चाहते हैं, यदि सच्चाई को उजागर करते हैं, तो उन्हें अपनी जान गंवानी पड़ती है। कितने ईमानदार पत्रकार, इंजनियर और अन्य पदों पर आसीन अफसरों को मौत के घाट उतार दिया गया है। इस डर से ईमानदार भी चुप रहने में अपनी भलाई समझते हैं। यही हाल सब महकमों में है।

बेईमानी की इन्तहा है, खाने, पीने के सामान में मिलावट करके लोगों की ज़िन्दगियों से खेला जाता है। सब्जियों में टीके लगाए जाते हैं। बेईमानी के क्या क्या तरीके हैं, जिन्हें सोचकर हृदय कांप जाता है।

धार्मिक स्थलों में पदों को पाने के लिए क्या क्या षड़यन्त्र रचे जाते हैं, क्यों? क्या धर्म की सेवा करने के लिए? नहीं, केवल मात्र धन लूटने, अपने स्वार्थ सिद्ध करने, अपनी ऐश और सुख स्वादों को भोगने के लिए यह सारी जदो जहद होती है। जब कोई धर्म समाज गरीब होती है, उस समय केवल वह जन आगे आते हैं, जो निस्वार्थ सेवा करना चाहते हैं, जब उन्हीं लोगों की मेहनत से समाज में पैसा आ जाता है तो स्वार्थी लोगों का जमघट लग जाता है, ओर स्वार्थ रहित सेवा करने वालों को बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है और न केवल स्वयं बल्कि अपने बाल बच्चों को भी उस बेईमानी में शरीक बना लेते हैं। यह एक धर्म समाज का हाल नहीं, सब धर्म ही स्वार्थी लोगों से भर गए हैं। उनको ईमानदारी से काम करने वाले लोग मूर्ख लगते है।

ऐसे भ्रष्ट महकमों, समाजों के जनों को

न्यूज़ीलैंड की उदाहरण भी उभार नहीं सकती, उल्टा उन्हें वह दम्पति भी मूर्ख ही लगेंगे।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने उस समय जो अद्वितीय धर्म समाज की स्थापना की थी, उसमें ईमानदारी का ख़मीर पैदा किया था। उस समय के उच्च कोटि के कर्मचारियों के होते हुए भी उन्होंने मनुष्य प्रकृति की नीचता को भांप लिया था, तभी उन्हें विवश यह कहना पड़ा कि उनका यह मिशन विकासकारी विभाग के हवाले है। परन्तु आज विनाश की इतनी प्रबल लहर उठ चुकी है कि विकास की रफ्तार दब गई है, परन्तु विकास का क्रम कैसे आगे बढ़ेगा, इसका हम अनुमान नहीं कर सकते, बढ़ेगा अवश्य!

वैलिंगटन (न्यूज़ीलैंड) :- यहां के स्टेलन आईलैंड में एक कपल को घर के गार्डन से जमीन में दबा हुआ खजाना मिला। यहां रहने वाले मैथ्यू और उनकी पत्नी मारिया गार्डन में जमीन खोदकर नया पौधा लगा रहे थे। उन्होंने कुछ फीट जमीन खोदी तो उन्हें एक लोहे का बक्सा नजर आया। पहले उन्हें लगा कि ये किसी तरह का केवल बॉक्स होगा, लेकिन जब उन्होंने बॉक्स को खोला हैरान रह गए। ये बॉक्स सोने, चांदी और करंसी से भरा हुआ था। इसके अंदर कई बैग मिले जिसमें सोने की रिंग्स और चेनें थीं। इनकी कुल कीमत 52 हजार डॉलर यानी करीब 35 लाख रूपए थी।

और फिर मिला एक पता :- बेशकीमती जवाहरात और कई बैग देखकर मैथ्यू और उनकी पत्नी समझ गए कि ये कोई चोरी किया हुआ खजाना है, जिसे यहां गाड़ा होगा। बॉक्स में एक पता भी मिला, जिसमें पड़ोस के ही एक घर का एड्रेस लिखा था। मैथ्यू ये बॉक्स लेकर उसी एड्रेस पर पहुंचे और पुलिस को भी सूचना दी। मैथ्यू ने कहा, मैंने जब पड़ोस के उस घर पर जाकर पूछा कि क्या कभी आपके यहां चोरी हुई थी? तो उन्होंने कहा, हां हुई थी। इसके बाद न्यूयॉर्क पुलिस डिपार्टमेंट ने भी इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि 2011 में इस एड्रेस पर चोरी का मामला दर्ज हुआ था, जिसमें 52 हजार डॉलर की चोरी का जिक्र है।

और फिर लौटा दिया खजाना : ये जानकारी मिलने के बाद मैथ्यू और उनकी पत्नी ने सारा खजाना उसके सही मालिक को लौटा दिया। कई लोगों ने उनसे पूछा कि आपने खजाना लौटा क्यों दिया? तो मारिया ने कहा-वो हमारी चीज नहीं थी। हमें कोई पुरस्कार भी नहीं चाहिए, क्योंकि जो हमने किए वो हमारे अच्छे कर्म है। ख़जाना मिलने की याद में उन्होंने उस जगह अब एक मिट्टी का हाथी रख दिया है।

अब ऐसी उदाहरणें पढ़कर बेईमानों का सिर शर्म से झुक जाना चाहिए। यहां तो ओहदा और ताकत मिलने पर खजाने तो कहां वापिस करते थे, वहां तो लूट का माल मिले फौरन अपने घरों में पहुँच जाता है। कहीं वेट लिफटिंग के सैट घरों में चले जाते हैं, गले, मेज कुर्सियां, पंखे जो भी संभव हो बेईमानों को लूटने में कोई शर्म नहीं आती। पैसे पर अधिकार होने पर तो कहना ही क्या? जिस लक्ष्य के लिए पैसा मिलता है, उसकी तो खाना पूर्ति होती है, बाकि सब अपने स्वार्थ में खर्च होता है। सरकारी वा संस्थानों की गाड़ियों का नजायज़ लाभ उठाया जाता है, दूसरों के सिरों पर तेल के बिल पड़ते हैं। बड़े 2 घोटाले तो छोड़िए, यह छोटी 2 बातों में भी धार्मिक कहलाने वाले लोग ईमानदार नहीं। ऐसे बेईमानों के आगे भगवान देवात्मा की अद्वितीय पुकार कि बेईमानी घातक है, वैसी ही है जैसे मेले में बीन बजाना। परन्तु नेचर किसी को क्षमा नहीं करती। यह बात याद रखने योग्य है।

-सुरजीत बराड़

हाय! मिथ्या विश्वास कितने भयानक!

जैन संत मुनिश्री तरुण सागर जी जिनका जीवन मानव-जाति के लिए एक ललकार थी। अपने क्रान्तिकारी और कड़वे प्रवचनों के लिए पहचाने जाने वाले मुनिश्री जब 2011 में आर. एस. एस (R.S.S.) के बुलाने पर गये तो उन्होंने संघ वासियों को हिदायत दे डाली कि "आपकी ड्रैस अहिंसा के विपरीत है, आप इसमें चमड़े की बैल्ट का इस्तेमाल करते है। (उनके मतानुसार यह स्पष्ट था कि इससे पशु-वध में सहयोग देना है) इस पर संघ ने फौरन अपने इसे फैसले को बदल चमड़े की जगह कैनवैस की बैल्ट को शामिल किया। उन्होंने कहा कि "जैसे शरीर और बिमारी के हिसाब से भोजन में बदलाव जरूरी है, जैसे 100 साल बाद जर्जर मकान को गिरा देना चाहिए, उसी तरह हजार साल बाद धर्म को जला देना चाहिए, क्योंकि धर्म में भी समय के साथ कई बुराईयाँ आ जाती है, उन्होंने अपने प्रवचनों में फर्जी बाबाओं के बारे में कहा कि "जिन पर दुष्कर्म के आरोप सिद्ध हो गये हैं उन सभी के पुतले बनाकर दशहरे पर दहन करना चाहिए ताकि समाज में नैतिक सन्देश जाए।"

ऐसे व्यक्ति विशेष से जहाँ समाज को उचित मार्ग दर्शन के संकेत मिलने थे, जैसा उनका जीवन समाज के लिए उत्साह वर्धक था, उनके प्रवचन क्या जैन समाज और क्या अन्य समाजों के लिए प्रेरणादायी थे ऐसे लोकप्रिय संत ने भी अपने धर्म विश्वासों के वशीभूत होकर 'संथारा' की प्रक्रिया को अपनाया। सन्थारा जैन समाज में वह परम्परा होती है जिसमें संत 'जीवन समाप्ति' को लक्ष्य मानकर अन्न-जल त्याग देते हैं। वह पीलिया (जोण्डिस) रोग से व्याधिग्रस्त थे जिसका उन्होंने समुचित इलाज न करवाया बल्कि अपेन धर्म विश्वासों के अनुसार अपने गुरू पुष्पदंत सागर जी से अपने समाधीकरण (प्राणों के त्याग) की बात की और आज्ञा माँगी परन्तु उनके गुरू उनकी इस बात से सहमत नहीं थे, उन्होंने कहा आप बहकी-बहकी बातें क्यों कर रहे हो, अभी तुम्हें समाज में बहुत काम करना है....." परन्तु मुनिश्री नहीं माने। फोन पर ऐसी बातें होने के बाद फिर तरूण सागर जी ने वीडियो कलिक की व गुरू के दर्शन कर उनसे आर्शीवाद माँगा। उनके गुरू ने बताया कि वे मुनिश्री को लेटा हुआ व अत्यन्त कमज़ोर देखकर हैरान रह गये। उनसे उनकी हालत देखी नहीं जा रही थी सो उन्होंने आर्शीवाद दिया और फोन काट दिया..... इस घटना के एक दिन बाद इस विभूति ने 51 वर्ष की उम्र में संसार से विदा ले ली। मिथ्या विश्वास कितने भयानक!

- यह घटना दैनिक भास्कर में
2 सितम्बर, 2018 को प्रकाशित हुई थी

आवश्यक सूचना

1. *आपकों यह जानकर बहुत प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष भी महोत्सव मुबारक, डेराबस्सी के निकट स्थित देव आश्रम में 21 से 24 दिसम्बर तक मनाया जाएगा।*
2. *देव आश्रम में 15 सितम्बर से 21 सितम्बर तक विशेष सत्संग रखा गया, और 21, 22, 23 को सत्य धर्म बोध उत्सव मनाया गया, जिसका वृतांत अगले अंक में दिया जाएगा।*

इन सचाईयों को मत भूलो

(अध्यात्मिक चेतना के नये स्वर)

भगवान् देवात्मा ने जिन कई सचाईयों का प्रकाश और प्रचार किया है, उनमें से एक विचित्र सचाई का नाम परिवर्तन विषयक नियम या तत्व है। परिवर्तन के नियम या तत्व से हमारा तात्पर्य है कि नेचर अपने सारे रूप में प्रतिक्षण बदलती रहती है। नेचर के परिवर्तनशील होने से उसका प्रत्येक छोटा वा बड़ा जीवित वा अजीवित अस्तित्व परिवर्तित होता है। इस परिवर्तन विषयक नियम के अधीन सारा मनुष्य जगत भी है, और मनुष्य जगत का प्रत्येक मनुष्य भी है। इस परिवर्तन विषयक नियम के अधीन होने से प्रतिक्षण मनुष्य का न केवल शरीर बदलता है, बल्कि उसका आत्मा भी बदलता है। नेचर का यह परिवर्तन विषयक कार्य अटल है। दृष्टांत के तौर पर करोड़ों मनुष्यों का शरीर इस नियम की सत्यता को प्रकाशित करता है। क्या यह सत्य नहीं है, कि प्रत्येक मनुष्य का शरीर माता के पेट में बनता है। माता के पेट से बाहर आकर प्रत्येक मनुष्य असहाय पैदा होता है, चाहे वह मनुष्य महात्मा या बुद्ध, ईसा या मुहम्मद, चर्चिल या गांधी क्यों न हों। प्रत्येक असहाय बच्चा धीरे-धीरे परिवर्तित होना शुरू करता है। बच्चे से जवान हो जाता है। जवान से बूढ़ा हो जाता है। और बूढ़ा होकर स्थूल शरीर के विचार से मर भी जाता है।

इतिहास को पढ़ने वाला प्रत्येक जन जानता है, कि सदियों तक भारतवर्ष में मुग़लों का राज्य रहा है। इन मुग़लों की महारानियों में से एक का नाम नूरजंहा था। उस समय की दुनियां में उसके सौन्दर्य की सारे भारतवर्ष में चर्चा थी। उसके सौन्दर्य पर ही मोहित होकर शहनशाह जहांगीर ने उसके अपनी मलिका बनाने के लिए बहुत बड़ा संग्राम किया और उसे अपनी मलिका बनाकर बहुत बड़ा सौभाग्य समझा। ऐसी विख्यात सुन्दरी क्या अपनी सुन्दरता को स्थिर रख सकी? क्या यह सच नहीं, कि उसकी आयु के बढ़ने के साथ उसका सौन्दर्य दिनों दिन घटता गया। वह मलिका होकर भी अपने शारीरिक सौंन्दर्य के घटने के कार्य को बन्द न कर सकी। क्या वह अपने बुढ़ापे को रोक सकती थी? क्या सारे भारत की महारानी होकर अपने स्थूल शरीर की मृत्यु को रोक सकती थी? जिस सुन्दर शरीर के प्रेम में शहनशाह जहांगीर तक भी फंस गया था, क्या वह सुन्दर शरीर नूरजहां के परलोक गमन के बाद क़बर में दफ़न नहीं किया गया, और कीड़ों के हवाले नहीं हो गया? क्या यही परिणाम प्रत्येक सुन्दर स्त्री और पुरुष का नहीं होता? जब यह निश्चय है, कि हमारा स्थूल शरीर परिवर्तन विषयक नियमानुसार क्या अपने यौवन और क्या अपने सौन्दर्य को खो बैठेगा, तब क्या यह मूर्खता नहीं, कि मनुष्य इस खोए जाने वाले यौवन और सौन्दर्य के पीछे मन को ललचाएं और दिल को तड़पाएं और अपने ही हाथों से अपने सुख और जीवन को बुरी तरह बरबाद करें।

इस परिवर्तन विषयक नियम का अटल कार्य मनुष्यात्मा के जीवन पर भी पूर्ण रूप से अधिकार रखता है। प्रत्येक मनुष्यात्मा अपनी चिन्ताओं और क्रियाओं से क्षण-क्षण में परिवर्तित होता है और परिवर्तित होकर अपनी दशा में या तो पतित या नीच बनता है, या उच्च या श्रेष्ठ बनता है। परिवर्तन के अटल नियम के अधीन हमारे आत्मा में जो परिवर्तन होता है, उस परिवर्तन का फल उसी समय हमारे जीवन में उत्पन्न हो जाता है। उसको कोई रोक नहीं सकता। इस फल को देने वाले की भी कोई ज़रूरत नहीं। नेचर

के जिस अटल नियम को हम अपने जीवन में पालन करते हैं, उसके फल को हम रोक नहीं सकते। जिस प्रकार ग़लती से भी विष खाने से हम चाह कर भी उसके परिणाम से नहीं बच सकते, उसी प्रकार नीच चिन्ताएं और नीच क्रियाएं करके हम चाह कर भी आत्मिक पतन को नहीं रोक सकते। एक-एक मुसलमान यह कह सकता है, कि मैंने बकरा ईद के अवसर पर अपने अल्ला का खुश करने के लिए भेड़, बकरी या गाय को कत्ल किया है, और इसलिए मैं पतित नहीं हुआ और नीच नहीं बनूंगा। लेकिन उसका यह कहना व्यर्थ है। पाप की गति पाप की गति ही है और वह पाप की गति पाप के ही फल उत्पन्न करेगी, चाहे हम किसी मिथ्या विश्वास के कारण उसे पुण्य की गति ही समझें। जिन हत्यारे खुदा परस्तों ने अपने मिथ्या विश्वास के अनुसार जहाद (मज़हबी जंग) करके लाखों बेगुनाह परिवारों को नष्ट किया और उनके बीवी बच्चों को गुलाम बनाया, वह हत्यारे आत्मिक जीवन के विचार से दुष्ट और पापी बन गए चाहे वह अपने आपको धर्मवान् समझते रहें।

एक जन को मैं मिलने के लिए गया। वह ईश्वर भक्त समझा जाता था और बड़ी कथाएं करता था। मेरे साथी ने उससे पूछा, कि क्या तुम रिश्वत लेते हो? उसने उनसे कहा कि जी हां लेता हूं। मेरे परम दयालु गुरु ने मुझे इस की आज्ञा दे दी है। परम दयालु गुरु रिश्वत को ठीक समझ कर रिश्वत के स्वाभाविक फल को रोक नहीं सकता था। रिश्वत लेने के साथ ही वह जन बद्दयानत होता गया और बद्दयानत होकर दिनों दिन आत्मा के विचार से पतित होता गया।

लाखों जन यह विश्वास करते हैं, कि वह झूठ, ठग्गी, कपटता आदि नाना प्रकार के बुरे कामों से धन इक्ट्ठा करके, यदि थोड़ा सा धन किसी गुरूद्वारे, किसी मन्दिर या किसी भलाई के काम में दे दें, तो उनको अपने पाप जीवन का फल भोगना नहीं पड़ेगा। कैसी ख़ौफ़नाक आत्मिक अन्धता! ठग्गी से आदमी ठग बन जाता है। कपटता की गति से मनुष्य कपटी बन जाता है। ठग या कपटी बनना आत्मा की नीच गति है। और आत्मा की प्रत्येक नीच गति आत्मा का पतन लाती है। और आत्मा के पतन से मनुष्य अपने आत्मिक बल या निर्माणकारी बल को खोता जाता है। आत्मिक अन्धकार-ग्रस्त मनुष्य यह बोध नहीं करता, कि यदि आत्मिक बल या निर्माणकारी बल नष्ट हो गया, तो मेरा अस्तित्व कहां रहेगा। शोक! कि मनुष्य अपने आत्मिक पतन से नहीं डरता है और यह भी नहीं जानता कि प्रत्येक मिथ्या और अशुभ की गति से मनुष्य पतित होता है। क्या हुआ यदि मनुष्य ने धन कमाया? क्या हुआ यदि मनुष्य ने जायदाद बना ली? क्या हुआ यदि मनुष्य ने सांसारिक वैभव या पदवी पाली? लेकिन उनके प्राप्त करने में उसने मिथ्या और अशुभ की जो गतियां ग्रहण की, उनसे अपने आत्मिक पतन को बढ़ाया, और अपने निर्माणकारी बल को खोया। कितना बड़ा घाटा!

नेचर का यह अटल नियम है, कि मिथ्या और अशुभ की गति किसी सूरत में भी उचित नहीं है। हो सकता है, कि किसी का लक्ष्य उच्च हो, परन्तु यदि उसको पूरा करने में उसकी गतियां मिथ्या और अशुभ मूलक हों, तो उसका आत्मिक पतन अनिवार्य है। किसी जन को किसी धर्म समाज में लाने के लिए झूठ का व्यवहार पूर्णत: अनुचित है। झूठ की गति आत्मिक पतन लाती है। हम अपने आत्मिक पतन से और किसी के आत्मा को शुद्ध नहीं बना सकते।

नेचर के इस अटल परिवर्तन कार्य के अनुसार जब हम प्रतिक्षण या तो उच्च वा श्रेष्ट बनते हैं, या पतित व नीच बनते हैं और जब हम एक स्थान में ठहर नहीं सकते, तब हमारा सबसे बढ़कर यह कर्तव्य

है, कि हम उन गतियों का ज्ञान लाभ करें, कि जिन से उच्च या नीच बनते हैं, पतित या श्रेष्ठ बनते हैं, और हम ऐसी सब गतियों से डरें कि जिनके करने से हम पतित दशा को प्राप्त होते हैं, और हम उन कुल गतियों को धारण करें, जिनसे हम श्रेष्ट बनें।

हमें यह पूर्ण विश्वास है कि हम सब के सब किसी न किसी समय इस पृथ्वी को त्याग देंगे। यहां के धन, पदार्थ और सम्बन्धियों को हमें छोड़ना ही होगा। परन्तु जिन गतियों को हम करते रहे हैं, उनके फलों से हम पीछा नहीं छुड़ा सकते। यदि हमने दुनियां के पदार्थों और अन्य सम्बन्धियों को पाने और रखने की ख़ातिर अशुभकर गतियां की हैं, तो हमारा आत्मिक पतन अवश्य हो गया है। और यह आत्मिक पतन लम्बे काल तक परलोक में भी हमारा पीछा न छोड़ेगा। मिथ्या और अशुभकर गतियों का कैसा भयानक परिणाम!

प्रेरणा – दायक जीवन

पिछले दिनों कुछ घटनाएं देखने, कुछ पढ़ने और कुछ सुनने को सुअवसर मिला। सर्वप्रथम आंखों देखी तस्वीर पेश कश्रती हूं। मुझे अपने बेटे, बेटी के साथ फरीदाबाद के पास एक गांव में जाने का सुअवसर मिला, वहां पहले मेरी बेटी अपनी साथी स्त्रियों के साथ गई थी। हम सब भक्त पूर्ण सिंह की जीवनी को जानते हैं, कैसे उन्होंने लूले, लगड़ों, अपाहजों, बिमारों, लावारिसों की सेवा की, उसकी movie भी हमने पिछले दिनों देखी, उनका त्याग और सेवा के दृष्य हृदय को हिला रहे थे, परन्तु इस गांव में एक और भक्त पूर्ण सिंह जी की तरह काम कर रहा है, जिनका नाम है रवि कालरा। उन्होंने एक N.G.O. बनाई है –जिसका नाम अर्थ सेवियरज़ फाऊंडेशन (Earth Saviour Foundation) है।

यह संस्था कैसे शुरू हुई? कालरा साहिब ने बताया, कि नौजवानी में ही उनकी पत्नी बच्चे लेकर चली गई ओर मैं अकेला यही सोचता रहता कि अब जिन्दगी में कुछ भला काम करना है। पर कुछ सूझता नहीं था। परन्तु एक दिन सड़क पर मैंने क्या देखा कि कूढ़े के ढेर पर एक सुअर कुछ न कुछ खा रहा है, वहीं एक बच्चा उसी गन्दगी से खाने के लिए कुछ उठाकर खा रहा है, बस उस दिन से यह इरादा कर लिया कि अब गरीबों–असहायों की मदद करनी है।

इस मकसद के लिए थोड़ी जगह ली, पहले एक दो दुखिआरे मिले, पर ज़्यों ज़्यों लोगों की पता लगता गया तो लूले, लंगड़े मान्सिक बिमारी वाले इकट्ठे होते गए। पुलीस वालों को भी ऐसा कोई मिलता तो मेरे पास छोड़ जाते, फिर जगह कम पड़ने लगी, तो फरीदाबाद के पास एक गांव में मेरी अपनी जमीन थी, उस पर मैंने कुछ स्वयं, कुछ और सेवाकारियों की मदद से 200 बिमारों के लिए जगह बनाई। फिर गांव वालों की विरोधता का सामना करना पड़ा कि कहां से यह हमारे गांव में आ गया हमारी ज़मीनों की कीमते गिर जाएंगी, परन्तु धीरे 2 उन्हें समझ आ गई कि यह कोई मुनाफे का काम नही कर रहा है, सेवा कर रहा है, तो वह भी कुछ सहायता करने लगे। अब 200 के स्थान उनके पास 450 की हाज़री है, जिनमें बहुत दिमाग़ी पागलों की तरह है, कोई ज़ख़्मी है, कैंसर के मरीज है, कोई कृतघ्न–संतान द्वारा त्यागे माता पिता हैं। जिस प्रकार का वहां का नज़ारा था, वह दिल को हिलाने वाला था। उस जन का त्याग और जो वहां सेवा के लिए रखे हुए हैं, उनकी सेवा देखकर साफ अनुभव होता था कि समान वा पैसा देना भी कठिन है, पर हाथों द्वारा सेवा के सामने वह सबसे

आसान है। हम उनके लिए खाने के Packet ले गए थे, वह सब लेने के लिए झपटते थे। कालरा साहिब ने बताया एक-2 सम्पन्न परिवार के बेटे कारों में आते हैं और गेट पर बूढ़े मां-बाप को छोड़ जाते हैं। एक अच्छे घराने का लड़का अपनी मां को छोड़कर गया, जिसका वज़न 10 किलो थो, उसकी फोटो लगी हुई थी। उसको कैसे सताया, तड़पाया गया होगा कि एक बच्चों की जननी इस हालत में पहुँच गई। ऐसी कितनी घटनाएं उन्होंने बताई। बताया कि एक महीने में 6-7 मौतें हो जाती हैं। उनका संस्कार विधि विधान से करते हैं, 2-3 महीने बाद इकट्ठी अस्थियां ले जाकर प्रवाह करके आते हैं। हम हर एक त्यौहार मनाते हैं, तब यह बहुत खुश होते हैं, जो ले जाने के योग्य होते हैं, उन्हें पिकनिक पर भी ले जाते हैं ताकि वह कुछ नार्मल महसूस करें।

उनकी सेवा देखकर उनके आगे बार 2 दिल झुकता था। हम जो कर सकते थे किया और आगे भी करते रहने का अश्वासन दिया, पर कितना धन दे दें, उनकी सेवा के आगे ज़ीरो है।

एक फौजी सीनियर अफसर एक बूढ़े जन के साथ शतरंज खेल रहा था, कहते मुझे जब भी समय मिलता है, मैं आ जाता हूं और यह बज़ुरग बहुत खुश होता है। इस प्रकार धन से, समय देकर लोग सेवाकारी हो रहे हैं, परन्तु धन्य वहां लगातार सेवा करने वाले हैं, जिनको देखकर कुछ न कुछ तो सेवाकारी होने की प्रेरणा मिलती है। तनख़्वाह लेकर भी ऐसे मरीजों, मान्सिक बिमारों की सेवा करना बहुत कठिन है।

टी.वी. पर प्रोग्राम आता है "कौन बनेगा करोड़पति" उसमें वह एक सेवाकारी दो लोगों को मंच पर बुलाते है और जो धन राशि वह जीतते हैं वह उनकी संस्था को जाती है और उतनी ही रकम AXIS Bank उसमें और डालता है। उस सैशन में डाक्टर प्रकाश मुरलीधर आमटे और उनकी डाक्टर धर्म पत्नी मिनाक्षी आमटे आए थे। अब तो उनकी उमर 60-65 वर्ष अवश्य होगी, परन्तु मैडीकल की पढ़ाई पूरी करके, उनके पिता पिकनिक पर परिवार को आदिवासियों के रहने वाले स्थान पर किसी विशेष जगह पर ले गए और मार्ग में उन्होंने आदिवासियों को देखा, उनके तन पर कपड़े नाम मात्र थे, शिक्षा का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था। वहां पर उनको प्रेरणा मिली कि मुझे इन लोगों की सेवा करनी चाहिए, उस समय शादी की offer आई तो उन्होंने डाक्टर मिनाक्षी से पूछा कि तुम शादी के लिए तभी हां करना यदि तुम्हें आदिवासियों में रहना स्वीकार है। उसने हामी भर दी और दोनों की शादी हो गई और वह आदिवासियों के पास रहने चले गए। पहले पहले आदिवासी उनसे डर कर भाग जाते थे, परन्तु धीरे-2 सेवा से उनका विश्वास जीता और उनके ईलाज का कोई प्रबन्ध नहीं था, पहले अपनी झोंपड़ी के बाहर ही मरीज़ों का ईलाज करने लगे, फिर 1-2 कमरे का हस्पताल बनाया, जब कोई सेवा करता है तो, हाथों से न सही धन से सहायता करने वाले मिल जाते हैं। धीरे 2 आदिवासियों के सुसभ्य बनाने, उन्हें शिक्षा देने, उन्हें अच्छा रोटी कपड़ा कमाने के साधन देने लगे। उनकी तस्वीरें देखकर ऐसा लगता था कि यह हमारे से कितने ऊंचे लोग हैं, हम अपने घरों में रहते हुए भी दुखी रहते हैं और यह डाक्टर दम्पति जंगल में बिल्कुल असभ्य जनों में रहकर सेवा कमा रहे हैं। उनसे पूछने पर कि उनके बच्चों की परवरिश कैसे हुई? तो बताया कि हमारा बहुत बड़ा परिवार है, वहीं वह पले हैं। आते जाते रहते थे। अब तो बेटे की शादी हो गई, उनके पोते पोतियां भी वहां आते हैं।

इन्सानों की सेवा करते 2 उन्होंने जानवरों को भी आश्रय दिया हुआ है। एक बन्दर या कोई जानवर था, पूरी घटना तो याद नहीं, उन्हें वह न खाएं उन्होंने खरीद लिया, उसके बाद बन्दर, कुत्ते, घोड़े, रीछ, चीता, सांप उनके आंगन में ऐसे खेलते हैं जैसे बच्चे। उन्होंने

बताया कि कोई जानवर किसी पर हमला नहीं करता, यदि इनसे मित्रता रखी जाए तो यह मित्र बन जाते हैं। उनके पोते पोतियां सांपों को गले में डाले फिरते रहते हैं। जब वह सैर को जाते है, तो सारे जानवर पीछे पीछे चलते हैं। कुत्ते और बन्दर की दोस्ती तो इतनी गहरी है कि सैर को जाते हुए कुत्ता बन्दर के बच्चे को पीठ पर बैठा लेता है। बन्दर शरारती होता है वह कभी उतर कर खेतों में भाग जाता है, परन्तु कुत्ता उसकी इन्तज़ार करता है और वहीं खड़ा रहता है, फिर बन्दर आता है तो कुत्ते पर शान से सवार हो जाता है। उन्होंने हिंसक जानवरों के इस मेल का वीडियों, दिखाया, देखकर हैरानी आती थी। उन्होंने यह भी बताया कि जब से हम यहां हैं, एक भी घटना कभी बलात्कार की नहीं हुई, न कभी कोई चोरी हुई, जबकि हमारी सभ्य कहलाने वाली जाति के द्वारा बलात्कार और चोरियों, घाटालों की बाढ़ आई हुई है। ऐसे सेवाकरी जोड़े को हमारा शत: शत: प्रणाम।

तीसरी घटना दैनिक भास्कर में पढ़ी, जो इस प्रकार है : चीन के त्सिंगहुआ शहर में स्थापित विश्वविद्यालय में फाइनांस विषय के प्रोफेसर झाओ जिआ की बदौलत आज हज़ारों युवा अपना लक्ष्य हासिल कर पाए। उन्हें कैंसर हुआ तो उन्होंने अपनी दवा पर बेहद कम पैसे खर्च किए पर ज्यादा पैसे गरीब छात्रों पर लगाते रहे।

देशभर में 2,000 से विद्यार्थियों की मदद के लिए, वा समर्थन देने के लिए वह अब तक 15 मिलियन युआन (16 करोड़ दान कर चुके है) 1955 में स्कूल विभाग के रेडियो इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्शन से ग्रेजुएट करने के बाद उन्होंने त्सिंगहुआ विश्वविद्यालय में पढ़ाना शुरू किया। झाओं ने एक बार कहा, "मुझे शिक्षण पसंद है। 1985 में उन्होंने इस विश्वविद्यालय में इकनोमिक्स और मैनेजमेंट स्कूल स्थापित करने में मदद की। वह हमेशा सिंपल लाइफ को तरजीह देते है। इस बात का पता इससे चलता है कि 10 वर्ष वह एक ही स्वेटर पहनकर संस्थान जाते रहे। 2001 में टेक्सास विश्वविद्यालय में अतिथि प्रोफेसर के रूप में उन्होंने कार्य किया। विदेश में तीन साल के शिक्षण के बाद, झाओ ने विश्वविद्यालय के अनुकूल प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया और चीन वापस चले गए। वह वापस आए तो अपनी जमा पूंजी 5 मिलियन युआन उन्होंने देश के गरीब हाई स्कूल के छात्रों की मदद में लगाना शुरू कर दिया। 2011 में झाओ को फेफड़ों का कैंसर हो गया। इसके बावजूद उन्होंने गरीब छात्रों का समर्थन करने के लिए दान करना जारी रखा और इलाज के लिए खुद के लिए कम से कम महंगी दवाएं खरीदने का विकल्प चुना। उन्होंने 2012 में एक फाउंडेशन भी स्थापित की, जिसका उद्देश्य गरीब छात्रों की मदद के लिए आवाज उठाना था।

-सुरजीत बराड़

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

विशेष सत्संग

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मार्च महीने में देव आश्रम (निकट डेराबसी) में विशेष सत्संग रखा गया। यह सत्संग 7 मार्च से 15 मार्च तक रखा गया। इसके लिए धर्म सम्बंधियों को बार-बार फोन से सूचित किया गया। इसक फलस्वरूप गंगानगर, पदमपुर, गानियाना, मेरठ, देहरादून, मल्लेकां, कल्याण, केशूपुरा, राजसिंहपुर, लखनऊ, अंबाला आदि स्थानों से यात्री पहुँचे।

श्रीमान जगदीश जी, श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा, और रमेश जी ने मिल जुल कर सत्संग के लिए जरूरत अनुसार प्रबन्ध किये। मन्दिर में सुन्दर बिछाई और कुर्सियों का प्रबन्ध किया गया। यात्रियों के ठहरने के लिए कमरे तैयार किये गये। खाने का प्रबन्ध किया गया। इस सत्संग को कराने के लिए बठिंडा से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी पहुँच गये और चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी भी पहुँच गये। चण्डीगढ़, पंचकुला से भी धर्म सम्बन्धी आ कर शामिल होते रहे। 7 तारीख को प्रवेश सभा रखी गयी। हर रोज सुबह-शाम दोनों समय सभाएँ होती रहीं। सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी करवाते रहे और शाम की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी करवाते रहे, जिसमें श्रीमान बलदेव सिंह जी भी जरूरत अनुसार ब्यान करते रहे। देहरादून के डा० जयरथ साहेब, पदमपुर से बी.पी. सिंह जी के साथ एक साथी, राजस्थान से श्रीमान खेमचन्द जी, उनके पिता और उनके सुपुत्र, श्री गंगानगर से श्रीमान अशोक जी, अम्बाला से, श्रीमान चन्द्रगुप्त जी अपने परिवार सहित, पचँकूला से सुभाष जी और उनका सारा परिवार और D.S. चौहान जी विशेष लाभ उठाने वालों में शामिल थे। सभाओं का स्तर और विषय बहुत अच्छे रहे। श्रद्धा, कृतज्ञता और हानि परिशोध की सभाएं सोमवार से शनिवार तक और रविवार को पूजा की सभा होती रही। सभाओं में बहुत अच्छा वातावरण पैदा होता रहा।

हाजरीन अपने दोष और कमियाँ महसूस करके ब्यान करते रहे। कोई-कोई अपने उपकारियों का भी वर्णन करते थे जो कि बहुत सुन्दर नज़ारा था। दूर-दूर से पहुँच कर हाजरीन का लाभ उठाना गुरू महाराज के आगे झुका रहा था। बहुत अच्छे भाव प्रकाश होते रहे और लँगर आदि के लिए बहुत अच्छा दान भी मिला। हाज़रीन ने बहुत उत्साह और पवित्र खुशी महसूस की। निश्चय यह सत्संग किसी अंश तक सफल रहा। कुछ धर्म सम्बन्धियों ने पुस्तकें भी प्राप्त की। इस सत्संग की हर सभा की रिपोर्ट भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने तैयार की थी जो कि अफसोस है कि हमारी अबोधता से गुम हो गयी, जिसके लिए बहुत दिली खेद है। 15 मार्च दोपहर बाद तक अच्छी रौनक बनी रही। तेज गर्मी और खराब मौसम के बावजूद सत्संग निर्विघ्न समाप्त हुआ और यात्री अपने ठिकानों की ओर रवाना हुए।

(एक सेवक)

शोक समाचार

बहुत शोक का समाचार है कि हमारे साथी सेवक श्रीमान चमन लाल जी नेपाली की माता श्रीमती हीरा देवी जी का 18 सितम्बर की रात को निधन हो गया। 19 सितम्बर, 2018 को उनका देह संस्कार देव समाज विधि से किया गया। उनका श्राद्ध 30 सितम्बर को 10 बजे उनके ग्रह 2012 सैक्टर 69 मोंहाली में रखा गया है।

भगवान देवात्मा ने समाज के प्रचार विभाग की वर्तमान असन्तोष जनक अवस्था के जो मुख्य कारण बतलाए, वह यह है :-

1) इस विभाग के बहुत से कर्मचारियों में या तो आत्मिक परोपकार विषयक भाव बिल्कुल नहीं है, वा नाम मात्र है।

2) ऐसे जन अपने आत्मिक हित अर्थात् सत्य मोक्ष और उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए कोई अनुराग नहीं रखते।

3) उन्हें देवात्मा के साथ जिन कई उच्च भावों के द्वारा सच्चा आत्मिक योग करके उनके देव प्रभावों के लाभ करने और अपने आत्माओं में बेहतरी लाने की आवश्यकता है, इस साधनों को पूरा करने की वह योग्यता नहीं रखते, जैसा कि स्थूल देह त्यागी श्रीमान देवत्व सिंह जी रखते थे। अर्थात् ऐसे लोग देवात्मा के साथ वह आत्मिक सम्बन्ध नहीं रखते कि जिस से उन्हें उनके देव प्रभाव मिल सकें, जैसा कि श्रीमान देवत्व सिंह जी प्रतिदिन कई कई घंटे साधन करके लाभ किया करते थे।

4) उनमें से कितने ही जन धन सम्पति और सन्तान अनुराग और कितने ही जन कई प्रकार के और नीच अनुरागों के दास हैं और उनकी गुलामी के कारण या तो उनके दिलों में सात्विक वा उच्च भाव उत्पन्न ही नहीं हो सकते, वा किसी अंश में उत्पन्न होने पर उन्नत नहीं होते। और वह देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज के असरों को न खुद यथेष्ट मात्रा में ले सकते हैं, और न उन्हें औरों तक पहुंचा सकते है। और इसलिए उनके द्वारा जो थोड़ा सा काम होता है, वह सन्तोषजनक नहीं होता, और फिर जो होता है, वह बहुत घटिया दर्जे का होता है।

5) उनमें समाज के किसी विभाग वा किसी स्थान का चार्ज लेने और उसे विविध हानियों से बचाने और उसे उन्नत करने के लिए जिन दो उच्च भावों की आवश्यकता है (अर्थात् उसकी हानि से रक्षा के लिए ज़िम्मेवारी का भाव और उसकी उन्नति के लिए अनुराग भाव) उनकी बहुत कमी है। इसीलिए वह किसी संस्था वा समाज कि किसी विभाग के काम को हाथ में लेकर एक तरफ उसके सम्बन्ध में जरूरी ज़िम्मेवारी के साथ काम करके उसे हानि से बचाने और दूसरी तरफ उसमें उन्नति लाने के अयोग्य हैं।

6) उनमें से जो जो जन धन अनुराग और सन्तान अनुराग आदि में फंसे हुए हैं वह दूसरों को जनों को नीच अनुरागों से नहीं निकाल सकते, और अधिकारी जनों में परोपकार के कामों के लिए धन आदि के दान के सम्बन्ध में कोई उच्च भाव पैदा नहीं कर सकते।

7) उनमें से कई जन रुपया और जायदाद का पैदा करना अपना मुख्य लक्ष्य समझते हैं और प्रचार सम्बन्धी काम को रूंगे-झूंगे की चीज़ समझते हैं।

8) उनमें से कई जन पैसे को मुख्य रख कर काम करते है।

शुभ संग्राम

मल्लेका (सिरसा)

श्रीमान अजीत सिंह जी, श्रीमान गुरदेव राज जी और श्रीमान पम्मा जी ने बार-बार फोन करके सत्संग रखने के लिए प्रेरणा और प्रार्थना की।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने 14-08-2018 की शाम से 19-08-2018 सुबह की सभा तक देव धर्म की शिक्षा को लेकर प्रोग्राम रखा। स्थानीय धर्म-सम्बन्धियों ने पहले से ही देव-धर्म मन्दिर की सुन्दर सफाई और बिछाई की हुई थी। इस सेवा में श्रीमान सुन्दर लाल जी, श्रीमान रामचन्द्र जी, श्रीमान सुरजीत सिंह जी केसूपुर और दो और नौजवानों ने सहयोग किया। बिजली पँखों का प्रबन्ध किया। श्रीमान पम्मा जी ने इनवैरटर की सेवा की। सभाओं के विषय मुख्य रूप से इस प्रकार के थे :- मनुष्य को उच्च संगत और उच्च वातावरण की अत्यन्त ज़रूरत है। मिथ्या और पाप मनुष्य के लिए घातक है। हर इन्सान को उसकी परिचालक शक्तियाँ चलाती हैं, अपने स्वभाव अनुसार वह मनुष्य का भला या बुरा करती हैं। धर्म नेक बनने का ही दूसरा नाम है। सन्मान भाव, शुक्रगुजारी, हमदर्दी और हानि-परिशोध के सात्विक भावों के बगैर शुद्ध परोपकार नहीं हो सकता, और इसी कारण आत्म विनाश से रक्षा ओर जीवनी शक्ति का विकास भी सात्विक भावों द्वारा की गई गतियों द्वारा ही होता है, और योग्यताएँ इनमें सहायक जरूर हो सकती है।

इन दिनों में कुछ 10 सभाएँ हुई जिनमें केसूपुर से भी धर्म सम्बन्धी अपनी कारों और मोटरसाईकलों द्वारा पहुँचत रहे। श्रीमान सरताज सिंह जी के स्कूल का स्टाफ और बच्चे (बड़ी क्लासों के) कई सभाओं से लाभ उठाते रहे। सभापति जी ने बच्चों को नीतिमूलक सभाएँ करवाई। कई बच्चे हर रोज़ माता-पिता को प्रणाम करते रहे और घर के कामों में प्यार सत्कार से हिस्सा लेते रहे। माता-पिता ने बच्चों के अच्छे व्यवहारों के लिए सुन्दर भावों से खुशी प्रकट की। कई धर्म-सम्बन्धियों ने अपनी पारिवारिक उलझनों और समस्याओं का भी दुःखी हृदय से जिकर किया और सहायता के लिए प्रार्थनाा की। दो-तीन सभाओं में कई बार हृदय-स्पर्शी ये वातावरण पैदा हुआ। अपनी ढाणी से श्रीमान बलदेव सिंह जी भी हर एक सभा में अच्छे भावों से आकर लाभ उठाते रहे। खाली समय में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी कई घरों में पहुँचते रहे। श्रीमान गुरदेव राज जी भजन गाने और अर्चन के लिए फूलों की सेवा करते रहे।

एक सन्मान योग्य जन ने अपने एक विशेष रिश्ते के बिगड़ने पर दुःख और आँसुओं के साथ ब्यान किया। इस संग्राम में से गुज़र कर सभापति जी ने अपने अन्दर कुछ ऊर्जा और जान महसूस की। आखिरी सभा में कुछ जनों द्वारा 500 रुपये दान प्राप्त हुआ। सख्त गर्मी के बावजूद भी सभा में 28-29 जनों की हाज़री होती रही। कभी-कभी यह हाजरी 45 से ऊपर भी होती रही। धर्म सम्बन्धी श्रीमान जी को सिरसा रेलवे स्टेशन तक सन्मान पूर्वक छोड़ने आये। उनके सुन्दर भाव दिल को हिला रहे थे।

पदमपुर (राजस्थान) 24 अगस्त 2018 से 27 अगस्त तक :-पदमपुर में सभाओं का शुभ प्रोग्राम रखा गया जिसके लिए श्रीमान डा० मुंशा सिह जी बार-बार फोन करते रहे थे। यहाँ सुबह शाम आठ सभाएँ हुई। इन सभाओं में 15-20 तक आम हाज़री थी 2-3 सभाओं में 30 से ऊपर हाज़री रही। श्रीमान सुभाष सेतिया जी और श्रीमान गुरचरण सिंह जी भजनों

की सेवा करते रहे। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने देव-धर्म के कुछ विषयों जैसे धर्म क्या है? क्या नहीं है? उच्च भावों के बिना उच्च गतियाँ संभव नहीं, कृतज्ञता के विषय पर एक बहुत सुन्दर सभा हुई जिस में धर्म सम्बन्धियों ने देव-धर्म के उपकारों का ब्यान किया। सभापति जी भी ऐसे अवसर को अपना सौभाग्य महसूस करते रहे। श्रीमान बी.पी. सिंह जी, श्री राकेश मिरार जी, रामा जी पार्षद सेवा करके विशेष तृप्ति प्राप्त करते रहे।

मोनू चावला जी विशेष सेवाकारी होते रहे। इन्होंने अपनी धर्मपत्नी को विशेष तौर से सूरतगढ़ से बुलाया। रजनी जी ने अपने पति की शुभ इच्छा का सत्कार करते हुए सभाओं से विशेष लाभ उठाया। इस नादिर धर्म-संस्था ने जो परिवारों में स्वर्गीय नज़ारे कई सम्बन्धों में पैदा किये हैं, उनका धर्म-सम्बन्धी धन्यवाद के भाव से वर्णन करके पवित्र खुशी हासिल कर रहे थे। बहुत सुन्दर वातावरण बना रहा। एक नौजवान अपने दादा जी के गुणों का वर्णन करते नहीं थक रहे थे।

एक बहुत समझदार श्रद्धावान और सेवाकारी बेटे हर समय बातचीत में अपने श्रद्धेय पिता जी के उपकारों का वर्णन करने के लिए तत्पर रहते थे। एक सन्मानित डा० साहब सभी सभाओं में शामिल हुए। एक सभा में वे अपने बुज़ुर्ग पिताजी को भी लेकर आए। इन्होंने अपनी कुछ उलझनों के बारे में श्रीमान जी के साथ अलग से बातचीत करके विशेष लाभ उठाया। एक विवाहित लड़की की दीनता के अच्छे असर पड़ रहे थे। गजसिंहपुर से श्रीमान दूनीचन्द जी और उनके सुपुत्र श्रीमान खेमचन्द जी सभी सभाओं में हाज़िर रहे। अपनी खुशी और सुन्दर भावों के साथ दान भी दिया। इस सत्संग की आखिरी सभा 21-08-2018 सुबह 10 बजे समाप्त हुई। जिसमें 1070 रुपये दान प्राप्त हुआ। श्री रामा जी दोपहर तक बातचीत करते रहे इनके नौजवान सुपुत्र सुन्दर लाभ उठा रहे है।

<u>श्री गंगानगर (27-8-2018 से 30-8-2018)</u> :- यहाँ पर भी चार दिनों का सत्संग प्रोग्राम रखा गया। सन्मान के योग्य प्रिंसीपल पी. सी. दिवान जी बहुत समय से जोर लगा रहे थे। कुछ कारणों से इनकी इच्छा जल्दी पूरी नहीं की जा सकी। इस सत्संग में चण्डीगढ़ से श्रीमान गोपाल कृष्ण जी भी पहुँच गये थे। स्थानीय धर्म-सम्बन्धी श्रीमान अनिल कुमार जी, श्रीमान भाटिया साहेब आदि सब खत्री धर्मशाला में धर्म सम्बन्धियों का इन्तजार कर रहे थे। पदमपुर से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के साथ श्रीमान दूनीचन्द जी (गजसिंहपुर) पहुँच गये। शाम 8:30 बजे सभा रखी गयी। इस बार कई विशेष जनों ने सत्संग से लाभ उठाया।

श्री रजनीश कुक्कड़ जी और श्री जैन साहिब के अलावा एक डाक्टर साहिब, एक रिटायर्ड मैनेजर साहिब, दो और शिक्षित जन (पति-पत्नी) विशेष रुचि लेकर लाभ उठाते रहे।

पदमपुर से डा० मुंशा सिंह जी और बी.पी. सिंह जी कई सभाओं में शामिल हुए। एक भाटिया परिवार सभाओं से लाभ उठाता रहा।

श्रीमान अशोक कुमार जी, श्री भगवान दास जी सभी सभाओं में पूरा समय श्रद्धा-भाव से पहुँचते रहे। भगवान दास जी ने एक अखबार में भाई-बहिन की एक सुन्दर घटना को पढ़कर करीब 3 साल पहले बीड़ी-सिगरेट की लत का त्याग किया हुआ है। वे अपनी बहन का विशेष सन्मान करते हैं और उसकी शुभ इच्छा के लिए कुछ त्याग करने से पीछे हट नहीं सकते। ऐसे जनों के बीच पूजनीय भगवान देवात्मा की

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सच्ची धर्म शिक्षा का वर्णन करना सभापति जी अपना धन्य भाग्य समझते रहे। 'उच्च भावो' के बगैर कोई धर्म नहीं होता? बाहरी धर्म के साधन (पूजा, पाठ, चिन्ह) कोई वैल्यू नहीं रखते।' इन विषयों के ईलावा सभापति जी ने आत्मिक अंधकार और आत्मिक ज्योति के बारे में ब्यान किया। एक सभा में नीच घृणा के महाभयानक रुप का वर्णन किया। भगवान देवात्मा के प्रभाव ही इसका अचूक ईलाज (Antidote) हैं। श्रीमान नौध सिंह जी, श्रीमान नेत राम जी के उच्च परिवर्तनों को लेकर व सभापति ने अपने अन्दर आई भली तबदीली का भी सुन्दर ब्यान किया। 30 – 8 – 2018 सुबह इस सत्संग की आखिरी सभी थी। इसमें 550/ – रूपये दान प्राप्त हुआ।

– बलबहादुर सिंह जी

रसोई में है डेंगू का उपाय

आजकल डेंगू तेजी से फैल रहा हैं। इस बुखार से छुटकारा पाना आसान नहीं होता। इस दौरान मरीज के जोड़ों में दर्द और सिर में भी दर्द रहता है। साथ ही प्लेटलेट्स काफी कम हो जाते हैं। आपकी जानकारी के लिए घर में भी कुछ ऐसी असरदार चीजें मौजूद है जो इस बीमारी से लड़ने में आपकी मदद कर सकती हैं।

1. डेंगू के बुखार से राहत पाने के लिए नारियल पानी खूब पिएं। इसमें मिनरल्स और एलेक्ट्रोलाइट्स शरीर को मजबूत बनाने में मदद करता है।
2. तुलसी के पत्तों को गर्म पानी में उबाल लें और इसका पानी पिएं। इससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसे दिन में चार बार पी सकते हैं।
3. डेंगू बूखार में मेथी की पत्तियां उबालकर चाय बनाकर पिएं। ऐसा करने से शरीर के विषाक्त पदार्थ बाहर निकालते हैं और डेंगू का वायरस दूर होता है।
4. पपीते के पत्ते भी काफी असरदार हैं। इसमें मौजूद पपेन शरीर के पाचन को सही रखता है। इसका जूस पीने से प्लेटलेट्स तेजी से बढ़ते हैं।
5. तुलसी के पत्तों के साथ काली मिर्च को पानी में उबाल लें और पिएं। इससे इम्यून सिस्टम मजबूत होता है और यह एंटी बैक्टीरियल की तरह काम करता है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts